रात्रि क्लास 10/1/69 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

जैसे पहाड़ों पर जाते हैं हवाखोरी के लिये। रिफ्रेश होने। घूमना–फिरना होता है। आफिस में रहने से वह काम बुद्धि में रहता है। बाहर जाने से आफिस के ख्याल से फ्री हो जावेंगे। यहां भी तुम आते हो रिफ्रेश होने। आधा कल्प भक्ति करते2 थकावट हुई है ना। ज्ञान मिलता ही है पुरूषोत्तम संगम युग पर। पुरानी विनाश होती है तब जब कि नई दुनियां स्थापन हो। प्रलय तो होती नहीं। वह लोग समझते हैं दुनियां एकदम खत्म हो जाती है; परन्तु नहीं चेंज होती है। यह है ही नर्क। पुरानी दुनियां। नई दुनियां और पुरानी दुनियां क्या होती है यह भी तुम जानते हो। डिटेल सहित तुमको समझाया गया है। स्मृति में रखना है कल्प–वृक्ष नई और पुरानी। पुरानी को कलियुग, नई को सतयुग कहा जाता है। यह सुमिरण कोई नहीं करते हैं। तुम्हारी बुद्धि में विस्तार है सो भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। समझाने की रिफाईनेस नहीं है। पुरूषार्थ कर ऐसा बन रहे हो। दिल होती है ऐसा समझावें जो झट बुद्धि में बैठ जाये। बहुत समझने की बातें हैं। थोड़ा इशारा देना पड़ता है। इशारा मिलने से ही झट उठा लेंगे। 84 जन्म भी ठीक है। नई पुरानी दुनियां दुनियां भी ठीक है। कच्चे टूट पड़ेंगे बहुत टूट गये हैं। इसलिये भगवानुवाच है आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती..... समझा जाता है लड़ाई के मैदान में मारा–मारी तो बहुत ही होती है। यहां वह बात नहीं है। यहां है माया से युद्ध। माया से मरकर ईश्वर के बनते हैं, फिर ईश्वर से मरकर माया के बन जाते हैं। एडाप्ट हो फिर फारकती डायवोर्स देते हैं। समझा जाता है ऐसा होता है। माया बड़ी प्रबल है। बहुतों को तुफान में लाती है। माया ईश्वर की गोद से छुड़ाये लेती है टेम्पटेशन देकर। बच्चे भी समझते हैं हार जीत होती है। यह खेल ही हार जीत का है। 5विकारों से हारे हैं। अभी तुम जीतने का पुरूषार्थ करते हो। आखरीन जीत तुम्हारी है। बच्चों की बुद्धि में है। बाप के बने हैं तो पक्का बनना चाहिए। माया और ईश्वर का खेल है। तुम देखते हो माया कितनी टेम्पटेशन देती है। ध्यान–दीदार में जाने से भी खेल खलास हो जाता है। तुम बच्चों की बुद्धि में है अब 84 का चक्र लगाकर पूरा किया है। देवताएं फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बने। अभी शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मण बन फिर ब्राह्मण बन जाते हैं। तो वह सभी भूल जाते हैं। पांव पीछे हट जाता। दुनियांवी बातों में लग जाते हैं। फिर मुरली आदि भी याद नहीं रहती। रिफ्रेशता रहती ही नहीं। सिन्ध से ही बहुत आते थे। नालेज सुनाना तो बहुत ही सहज है। याद की यात्रा इससे भी सहज है। वह पढ़ाई है। इसमें कितने सबजेक्ट्स होते हैं। पढ़ाई टाइम लेती है; परन्तु याद डिफीकल्ट पढ़ाई सहज हो गया है। याद की सभी को डिफिकल्ट भासती है। तुम बच्चों को घड़ी2 बाप याद पड़े और साथ में स्वर्ग भी याद पड़े। कृष्ण तो याद पड़ न सके। उसने तो माता का नेपाज(पार्ट) लिया। ऊंआ ऊंआ किया। शिवबाबा ने ऊंआ–2 की क्या? भल वहां ऊंआ2 आवाज न भी हो; परन्तु फर्क तो है ना। तुम बच्चों की बुद्धि में है हम शिव जयन्ती मनाते हैं। क्या करते हैं, बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान बैठ देते होंगे। यह जरूर है शिवबाबा आते हैं। उनको बाबा बाबा कह मिलते हैं। बाप नई दुनियां स्थापन करने आते हैं। उनको स्वर्ग कहा जाता है। इतनी सहज बात भी भूल जाते हैं। शिवबाबा है रचयिता। पुरानी थोड़े ही रचेंगे। बात बड़ी सहज है। तुमको निमित्त बनाया है तुम कोई से भी पूछ सकते हो। यह वन्डर है। आत्माओं के सभी के शरीर का नाम पड़ता है। इनका शरीर का नाम नहीं पड़ता है। शिवबाबा एक ही बार आते हैं। भल आत्मा पिछाड़ी में आती है तो भी नाम पड़ता है। शिवबाबा एक ही बार आते हैं तो भी उनका नाम नहीं पड़ता है। उनको शरीर है नहीं। अच्छा, बच्चों गुडनाइट।

पायन्ट्सः– बहुतों को यह बैज लगाने में भी लज्जा आती है। देहअभिमान है ना। गाली तो खानी ही है। कृष्ण ने कितनी गाली खाई है। सबसे जास्ती गाली खाई है शिव ने, फिर कृष्ण ने, फिर सबसे जास्ती गाली खाई है राम ने। नम्बरवार है। डिफेम करने से भारत की कितनी ग्लानि हुई है। परमात्मा को सर्वव्यापी कहना यह नम्बर वन ग्लानि, फिर कृष्ण जो विश्व का मालिक था उनकी ग्लानि है। उनको भी विकारी बना दिया है। शिव को तो ठिक्कर–भित्तर में डाल दिया है। उनको शरीर ही नहीं तो विकारी कैसे उनको दिखावेंगे। कृष्ण को छोटेपन में ही विकारी बना दिया है। राम को तो रूला दिया। उनकी स्त्री चोरी हो गई। कैसी बातें बनाई हैं। ओम।